LVI-13

भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्रमे काव्यदोष विचार

"Kavya Dosha in Indian Literature and Western Literature"

१. दोष संकल्पनाका प्राचीनत्व

भारतीय साहित्यशास्त्रमे काव्यके विविध अंगोंके बारे मे समुचित विवेचन किया है। जैसे काव्यगुण का वर्णन किया है वैसे ही किंबहुना उससे भी जादा वर्णन काव्यदोषका किया है। काव्यको हानी पहुँचानेवाले इन तत्त्वोंका सखोल चिंतन किया है। काव्यदोषका स्वरूप कैसा होता है किस तत्त्वोंको हम दोष कहते है, रसहानीकारक इन तत्त्वोंको हटाने के लिए क्या करना चाहिए, इसके बारे मे काव्यसाहित्यशास्त्रज्ञोंने उत्कृष्ट मार्गदर्शन किया है। दोषोंके स्वरूप और प्रकारोंका विवेचन भरतमुनी से लेकर पंडित जगन्नाथ के विचारों तक हुआ है। इन आचार्योंके पूर्व ऋग्वेद, यजुर्वेद, अग्निपुराण, गौतमन्यायसूत्र, विष्णुधर्मोत्तरपुराण आदि ग्रंथोमे काव्यदोष विचारोंका उद्‌गम दिखाई देता है।

''उद्वेगजनको दोष:'' काव्यरसास्वादनमे बाधा डालने वाले तत्त्वोंको काव्यदोष कहते है। ''व्युत्पन्नैरनिबद्धत्वमप्रयुक्तत्वमुच्यते।'' अप्रयुक्त नामक दोषका स्पष्ट नामनिर्देष किया है। काव्यशास्त्रीय विवेचनके लिए अग्निपुराण समृद्ध ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ के ३३६ से लेकर ३४६ तक दस अध्यायोमे तथा २४५ और २४६ इन दो अध्यायोंमे काव्यदोषका विशेष रूपसे चिंतन किया गया है।

गौतमन्यायसूत्र मे शब्द प्रमाण प्रसंगमे अनृत, व्याघात, पुनरुक्त इत्यादी दोषोंकी संभावना होने के कारण मौखिक ज्ञान को अप्रमाण माना गया है। पाणिनीय अष्टाध्यायीमें भी अविमृष्ट विधेयांश दोष का उल्लेख किया गया है। उसी प्रकार कौटिल्यीय अर्थशास्त्रमे शासनाधिकार प्रकरण मे अपशब्द के माध्यमसे 'च्युतसंस्कृति' शब्ददोष का वर्णन किया है।

''लिंगवचन कालकारकाणामन्यथा प्रयोग अपशब्द:''

''आकृतिर्व्याघात पुनरुक्तमपशब्द: संभव: इति लेखदोषा:''

''उक्तस्यविशेषण द्वितीयमुच्चारणं पुनरुक्तम्''

उपर्युक्त प्रकार के अनुसार अर्थशास्त्रमे च्युतसंस्कृति, पुनरुक्त इत्यादी दोषोंका स्पष्ट रूपसे उल्लेख किया गया है।

अमरकोषके अनुसार जो दोष जानता है वो ही सच्चा दोषज्ञ है। ऐसा बताया है। विद्वान विपश्चिद् दोषज्ञ: सन् सुधी: कोविदो बुध:। धीरो मनीषी ज्ञ: प्राज्ञ: संख्यावान् पंडित कवि:। धीमान् सूरि: कृती कृष्टि लब्धवर्णो विचक्षण: छात्राऽन्तेवासिनौ शिष्यै, शैक्षा: प्रथम कल्पिण:''

Vijnana Bharati

२. दोष संकल्पनाका विवेचन

इस तरह सूत्र ग्रंथमे भी काव्यदोष संकल्पना बीजरूपमे उपलब्ध होती है। भरतमुनी अपने नाट्यशास्त्रमे काव्यदोषोंका व्याख्या, लक्षण सप्रकार वर्णन करते है। दोष का अभाव काव्यमे जरुरी है। भरतमुनीने दस काव्यदोष वर्णन किए है। भरतमुनी के बाद 'मेधावी रुद्रका' काव्यदोष विचारोंके लिए अच्छा योगदान रहा है। राजशेखरने काव्यमीमांसामे इसका समर्थन किया। रुद्रट, भामह, दण्डी इन सभी आचार्य काव्यदोष त्याज्य मानते है। भामहने अपने 'काव्यालंकार' ग्रंथमे सदोष काव्य को कुकाव्य, कुपुत्र जैसा निंद्य माना है।

सर्वथा पदमप्येकं न निगाद्यमवद्यवत्। विलक्ष्मणा हि काव्येन दु:सुतेव निन्द्यते ॥

भामहने काव्यदोषका सूक्ष्म विवेचन करके काव्यदोषके प्रमुख तीन प्रकार बताए।

१) सामान्य दोष - १) नेयार्थ २) क्लिष्ट ३) अन्यार्थ ४) अवाचक

२) वाणी दोष - १) श्रुति दुष्ट २) अर्थ दुष्ट ३) कल्पनादुष्ट ४) श्रुतिकष्ट

३) अन्यदोष - १) अपार्थ २) व्यर्थ ३) एकार्थ ४) ससंशय ५) अपक्रम ६) शब्दहीन ७) भिन्नवृत्त ८) यतिभ्रष्ट ९) विसन्धि १०) देश-काल-कला -लोकन्यायागम-विरोधी ११) प्रतिज्ञाहेतु दृष्टांतहीन

भामह के बाद दण्डीने भी दस काव्यदोष बताए है, भामह और दण्डीके काव्यदोष विवेचनमे साम्य है। उनके पश्चात आलंकारिक वामनने काव्यदोषों के २२ प्रकार वर्णन किए है।

भरतमुनीसे लेकर मम्मटाचार्य तक काव्यदोषविषयक चिंतनको देखा जाएँ तो सबसे अच्छा योगदान मम्मटाचार्यकाही है ऐसा मानना पडेगा। 'काव्यप्रकाश' नामक ग्रंथमे काव्यके सभी अंगोपर समुचित प्रकाश डाला है। काव्य का स्वरूप, व्याख्या, लक्षण, प्रकार, गुण, दोष, अलंकार इन सभी काव्यांगोंका सूक्ष्म विवेचन दिखाई देता है। 'काव्यप्रकाश' ग्रंथमे काव्यदोष प्रकरण सभी काव्यांगोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है तथा मार्मिक भी है। मम्मटाचार्य ने दोषकी परिभाषा इस तरह बताई है '' मुख्यार्थहतिर्दोष:' इस परिभाषामें ''मुख्य अर्थ का नाश '' (हति) काव्यमे दोष कहते है। मुख्य अर्थ क्या है ? किसको कहते है ? इसका स्पष्टीकरण स्वयं आचार्यनेही दिया है। मुख्य अर्थ ''रसश्च मुख्य: ' 'हति', 'अपकर्ष', 'हतिरपकर्ष:' अर्थात मुख्य अर्थका रसका नाश रसभंग होना दोष कहलाता है। दोषका सीधा संबंध रससे जोड दिया है। मम्मटका काव्यशास्त्रमे

यही सबसे बडा मौलिक योगदान माना जाता है। रसकी अनुभूतीमे बाधा निर्माण करनेवाले तत्त्वोंको नाम दोष है। हिन्दी साहित्यशास्त्रमे भी आचार्य मम्मट - विश्वनाथ इन आचार्योंकी साहित्य परंपराका यथायोग्य पालन किया है।

"मुख्यार्थ हतिर्दोष: रसश्च मुख्य:" इसमे यह स्पष्ट होता है की रसोसें दोषोंका निकट संबंध है। रसभंग करनेवाले दोष सर्वथा चिंतनीय है। आचार्य मम्मटने १० (दस) रसदोषोंका सूक्ष्म विवेचन अपने ग्रंथ मे किया है। सच्चा, निर्दोष काव्य हमारे मनको आनंदविभोर कर देता है ये बात भी यहाँ स्पष्ट कर दी गई है। "जैसे गुण काव्य का विधीपक्ष है वैसे ही दोष निषेधपक्ष है" इन बातोंको कवि ध्यानमे रखकर काव्य करे तो काव्य निश्चित रूपसे सर्वांगसुंदर, मनमोहक बनेगा, निर्दोष काव्य रचनाही मनको आनंदीत कर सकती है ऐसा स्पष्ट किया है। इसी तरह मम्मट आचार्य ने काव्यप्रकाशग्रंथके सातवे प्रकरणमें दोष संकल्पना सुस्पष्ट तथा विस्तारसे वर्णन की है। उनके सूक्ष्म विवेचन बुद्धिका अनुभव आता है। पाच भागोमे दोषोंका वर्णन किया है। पददोष, पदांशदोष, वाक्यदोष, अर्थदोष तथा रसदोष ऐसे विभाजनसे प्रकरणमें सुस्पष्टता प्रतीत की गई है। कुल मिलाकर ७३ काव्यदोषोंका वर्णन आचार्य मम्मटने किया है।

मम्मटोत्तरवर्ती आचार्योंने भी यह संकल्पना सुचारू रूपसे बताई है। इसी तरह भारतीय साहित्यशास्त्रमे काव्यदोष का चिंतन तथा उसको निष्कासित करने के लिए उपाय इस विषयमे गहरा चिंतन किया गया है।

Vijnana Bharati

३. पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्रज्ञोंका काव्यदोष चिंतन

यहाँ तक भारतीय साहित्याचार्योंका काव्यदोष चिंतन देखा। पाश्चात्त्य साहित्याचार्योंकी काव्यदोष के बारेमे क्या धारणा थी इसका भी अवलोकन करना जरुरी है। काव्यदोष के प्रती उनके विचार क्या थे, इस विषय मे उनका कैसा प्रतिपादन रहा यह समझ लेना भी आवश्यक है।

पाश्चात्त्य काव्यशास्त्रका आरंभ सबसे पहले युनानमे हुआ। इसमे प्लेटो, ॲरिस्टॉटल इनके साहित्य विचारोंकों अग्रक्रम देना आवश्यक है। जैसे भारतीय आचार्योंने काव्य विचारमंथन किया उसी प्रकार पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्रज्ञोंने भी काव्यस्वरूप समीक्षा, काव्यसौंदर्यकी प्रशंसा तथा काव्यदोषोंका समीक्षण सभी काव्यांगोंका विवेचन किया है। जब युनानमे काव्यशास्त्रका आरंभ हुआ तब इरानमे महाकवी 'होमर' सुप्रसिद्ध हो गये। युरोप खंड मे महाकवी होमर को उत्कृष्ट माना गया है। इ. स. पूर्व ९ के शतक कालखंडमे काव्यशास्त्र विचारधारा प्रवाहीत हुई। १) इलियड २) ओडेसी इन दोनों के महाकाव्य सुप्रसिद्ध है। होमर, हैसियड, पिण्डार इ. स. ६ वी शताब्दीके महाकवी माने जाते है। इस कालखंडके बाद होरेस, गार्जियस इनके काव्यविषयक विचार भी प्रसिद्ध हो गये। पाश्चात्त्य साहित्यसमीक्षाका मूलस्त्रोत ग्रीक समीक्षामे दिखाई देता है।

पाश्चात्त्य साहित्यविचार समृद्ध करनेमे प्लेटो और ॲरिस्टॉटल का योगदान भी महत्त्वपूर्व है। ॲरिस्टॉटल ने रितिशास्त्र (ऱ्हेटारिक्स) नामक ग्रंथमे काव्यशैलीविषयक विचार अभिव्यक्त किए गये। इसमे काव्यशैलीके चार प्रकार बताकर चार प्रमुख काव्यदोष भी बताए है। १) अतिरिक्त समास योजना २) अप्रचलित शब्द योजना ३) प्रदीर्घ, अपुष्टार्थक तथा अतिरिक्त विशेषणका उपयोग करना ४) खिचतान करके रूपक योजना ये सब काव्यदोष बताए है। काव्यशैलीके बारेमे बनाए हुए चार काव्यदोष भारतीय साहित्यविचारोंसे मिलेजुले दिखाई देते है। क्लिष्टता, अपुष्टार्थकता, अप्रयुक्तता, अप्रतीत इन काव्यदोषो जैसे है। नित्य और अनित्य तथा तत्त्वगत और सांयोगिक ऐसा स्पष्ट विभाजन ॲरिस्टॉटलने किया है। ॲरिस्टॉटल के बाद लाँजायनस नामक काव्यसमीक्षक का इ. स. १५५४ कालखंड माना जाता है। 'On the sublime' ग्रंथ लाँजायनसके नाम सुप्रसिद्ध है। ''उदात्त तत्त्वोंमे बाधा डालने वाले तत्त्वोंको काव्यदोष माना है। उदात्त तत्त्वोंमे बाधा डालनेवाले तत्त्वों को देखे तो १)

अभिरुचिहीन शब्दप्रयोग २) भावना का आडंबर ३) शब्दका आडंबर ४) चमत्कारिक प्रयोगकी प्रवृत्ती ५) अस्तव्यस्त भाषा ६) संक्षेपीकरण ७) अभिव्यक्तीमे क्षुद्रता इन सब विचारोंमे काव्यदोषोंकाही चिंतन है। जो भारतीय साहित्यविचारोसे साम्य रखता है। लाँजायनसने बताई हुई पंचसूत्री नामक विचारधारा तो साहित्यक्षेत्रमें महत्त्वपूर्ण है।

१) महान धारणा शक्ती (The power of forming great conceptions)

२) भावनाओंके आवेगकी तीव्रता (Inspired and vehement passions)

३) अलंकारोंकी उचित योजना (Formation of figures)

४) उच्चकोटीकी शब्दयोजना - शब्द शिल्प (Noble Diction)

५) गौरवपूर्ण शब्दयोजना, दर्जेदार रचना (Dignified and elevaded (composition))

काव्यदोष विचारोंके लिए पंचसूत्री मुल्यवान है। (A touch of genius can redeem a multitude of faults) ऐसा लाँजायनसका प्रतिपादन है। इनके बाद डायनोसियस रीतिवादी विचारवंत तीन तरहसे रीती विभाजन बताकर काव्यदोषके बारे मे भारतीय विचारोंसे मेल जोल रखते है। १) कठीनोदात्त (ऑस्टीयर) २) मसृण (स्मूथ, प्लोरीड) ३) मिश्र (मिक्स) इनमे ऑस्टियर काव्यशैली मे काव्यदोष स्वरुपका वर्णन किया है। । अनियमित पदरचना, कर्कश ध्वनिके माध्यमसे निर्माण हुआ काठिन्य, यह काव्यदोष ही है। निर्दोष काव्यरचना करनेके लिए ये दोष सर्वथा त्याज्य है। यह विचार भारतीय साहित्यमे बताए हुए उपनागरिका, परुषा, कोमला, वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली इन सभी प्रकारोमे दिखाई देता है। डायनोसियसके बाद डिमेट्रीयसने भी काव्यशैली चार प्रकारकी बताकर काव्यमे उदात्तत्ता का विपर्यय होनेसे काव्यमे दोष निर्माण होता है ऐसा बताया है। ड्रायडन, क्वीण्टीलीयर, रोमन पंडित, इन्होने भी काव्यदोषका सूक्ष्म चिंतन किया १) अनुपयुक्त शब्द २) अधिक शब्द ३) आडंबर युक्त तथा अतिरिक्त कोमल शब्द ४) शब्दोंकी विषम रचना ये सब काव्यदोष बताए है। भारतीय रीतीवादी वामनने भी विषमशब्दरचना काव्यदोष बताया है। बादमे इटली मे 'होरेस' नामक सुप्रसिद्ध काव्यशास्त्रज्ञ सामने आये उनकी विचारधारा 'आर्स पोइटिका' मे प्रगट हुअी है। होरेस ने काव्यमे 'औचित्य' की ओर विशेष ध्यान दिया परंपरावादी तथा उत्कृष्ट कवि थे।

Vijnana Bharati

भारतीय विचारवंत क्षेमेन्द्र के साथ होरेस के विचार मिलते जुलते है।

१) विषय तथा कथानक चुननेका औचित्य

२) चरित्रचित्रणका औचित्य

३) भाषाशैलीका औचित्य

४) घटना तथा दृश्य विधानका औचित्य

५) शब्द चुनने का औचित्य

६) छंद प्रयोगका औचित्य

इस प्रकार औचित्य विचार 'होरेस' के व्यतिरिक्त अन्य पाश्चात्य विचारकोने नही किया।

इसप्रकार पाश्चात्य विद्वानोने काव्यशास्त्रमे काव्यदोष विषयक चिंतन किया प्लेटो, ॲरिस्टॉटल, मॅथ्यु अर्नोल्ड, सिसेरो, डायनोसियस, डिमेट्रीयस, होरेस, क्विण्टिलियन, लाँजायनस, ड्रायडन आदी विद्वानोने साहित्यविचारधारा जोरसे प्रवाहीत की।

Vijnana Bharati

४. तौलनिक विवेचन

तौलनिक दृष्टीसे देखा जाए तो भारतीय साहित्यशास्त्र काव्यविषयक चिंतन जागतिक स्तर पर मौल्यवार है। सूक्ष्म चिंतन, सुसंगत विचारोंसे परिपूर्ण है यही विशेषता भारतीय विचारोंकी है अत: मानव्य विद्यामे (Huminities) यह काव्यदोषचिंतन वैश्विकदृष्ट्या महत्त्वपूर्ण है इसमे संदेह नही है। दोषज्ञ कवि के बारेमे ''कविर्मनिषी परिभू: स्वयंभू:।'' शुक्लयजुर्वेद ४०/२ ऐसा वर्णन किया है।

प्रो. कीथने ललित साहित्यका विवेचन किया श्री वेबरने 'हिस्ट्री ऑफ इंडीयन लिटरेचर' ग्रंथ लिखा। इनके ग्रंथोमे संस्कृत साहित्यमे निहित कवित्त्वके आदर्शोंका वर्णन किया है। कालिदास महाकविकी मुक्तकंठसे प्रशंसा की है। अत: तुलनात्मक दृष्टीसे भारतीय साहित्यविचार तथा काव्यदोष विचार उच्चकोटिके है, समृद्ध है अन्य साहित्य त्रोटक रुपसे है ऐसा प्रतित होता है।

'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रुपं रमणीयताया' काव्य रमणीय होने के लिए उसमे निर्दोषता लाना जरुरी है। कवि दोषज्ञ होगा तो ही काव्य निर्दोष तथा रमणीय होगा।

क्विण्टिलीयन नामक रोमन पंडीत कुछ काव्यदोषोंका निर्देष करते है, जैसे १) अनुपयुक्त शब्द २) अधिक (ज्यादा) शब्द ३) अवडंबरयुक्त तथा अतिरिक्त कोमल शब्द ४) शब्दोंकी विषम रचना ये चार काव्यदोष बताते है। रीतिविषयक विवेचन करते करते ये काव्यदोष भी बताए। भारतीय विचारवंत आचार्य वामनके विचारोंसे साम्य रखते है। भारतीय साहित्यशास्त्रमे असमर्थ और अधिकपद दोष वर्णन किए है वे क्विण्टिलिय के अनुपयुक्त और अधिकशब्द इन काव्यदोषो जैसेही वर्णन किए गए है। काव्यदोषोंका विचार गुण, रिती, अलंकार इस माध्यमसे पाश्चात्त्य विद्वानोंने भी अच्छी तरहसे किया ऐसा स्पष्ट होता है।

काव्यशैलीके बारे मे ड्रायडन वर्णन करते है की, व्यक्ती और विषय इनकी दृष्टीसे औचित्यको महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। क्षुद्र विचार प्रगट करनेके लिए महान शब्दसंहती, पुनरावृत्ती, शिथिल पदावली, अतिरिक्त अतिशयोक्ती, अनावश्यक विस्तार इत्यादीका काव्यमे आयोजन करना अक्षम्य काव्यदोष ही है।

काव्यलक्षणके बोरेमे आचार्य मम्मटने जैसी व्याख्या बताई है वैसे ही मॅथ्यु अर्नोल्ड नामक विद्वानोने बताया है। जैसे 'मानवी शब्दशक्तीका निर्दोष और आल्हादक उद्गार ही काव्य है। 'काव्यमे निर्दोषता महत्त्वपूर्ण

Vijnana Bharati

है इस तत्व का प्रतिपादन किया। भारतीय तथा पाश्चात्त्य सभी साहित्यशास्त्री 'काव्यका अंतिम ध्येय काव्यानंद की प्राप्ती है' ऐसा मानते है। इसके बारेमे मतभिन्नता नही है। काव्य निर्दोष होगा तो ही काव्यरस निर्माण होगा और रसिक मन को आनंदीत करेगा। सदोष काव्य इस निर्माण कार्य मे बाधा डाल देता है। रसिक मन को दु:ख पहुँचाता है। अत: दोष त्याज्य है।

इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानोंमे प्लेटो, ॲरिस्टॉटल, होरेस, मॅथ्यु अर्नोल्ड, सॉक्रेटीस, सिसेरो, क्विंण्टिलियन, डायनोसियस , डिमेट्रीयस, बेन जॉन्सन, दान्ते, लाँजायनस इन सभी विद्वानोंके काव्यविषयक तथा काव्यदोषविषयक विचारोंकी आलोचना की।

इस चिंतन से यह स्पष्ट हुआ की काव्य चाहे कौन से भी देश मे निर्माण हुआ हो तो भी उसका अंतिम ध्येय एकही रहता है औरवो है 'आनंदप्राप्ती' आनंदनिर्मिती सभी काव्यका महत्त्वपूर्ण उद्दीष्ट रहता है। चाहे अलग अलग ढंगसे काव्य निर्माण होता है इसमे कोई संदेह नही।

प्राचीन ग्रीक तथा रोमन विद्वानोंने काव्यके मुलभूत सिद्धांत, काव्य का स्वरुप, भेद, रिती, शैली इन सबके बारेमे अपेन विचार प्रदर्शित किए है। काव्य की भाषा, शैली, अलंकार आदीका विचार ग्रंथबद्ध किया है। इतस्तत: प्रगट किए हुअे विचार मनको संतुष्ट नही करते। भारतीय साहित्यशास्त्रमे जैसा काव्यगुणदोषोंका वर्णन किया है वैसा विचार प्रदर्शन पाश्चात्त्योंका नही है ऐसा स्पष्ट होता है। भले ही मतप्रदर्शनमे साम्य दिखता है। लेकिन उसको शास्त्रका दर्जा नही है।

निर्दोषं गुणवत् काव्यमलंकारैरलंकृतम्।

रसान्वितं कवि: कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिंच विन्दति।

रसान्वित काव्यको अग्रक्रम देकर महत्त्वपूर्ण माना है। काव्यरसको अलौकिक काव्यानंद माना है। काव्यानंदमे बाधा डालनेवाले तत्त्वोंको काव्यदोष माना है इसके बारे मे भारतीय तथा पाश्चात्त्य सभी विद्वानोंका मतैक्य है।

"रसापकर्षक: दोष:।"

'मुख्यार्थहतिर्दोषा रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद्वाच्य:'।

५. उपसंहार

काव्यका प्रमुख प्रयोजन काव्यानंदही है इसमे सभी विद्वानोंका मतैक्य है । शैलीका विषयक विचार प्रकटनमे भी काव्यानंद निर्माण करनेवाला काव्यही श्रेष्ठ होता है । इसमे भी मत साम्यता दिखाई देती है ।

हरेक प्रतिभावान व्यक्ती अपने क्षेत्रमे नया रास्ता खोजता है । नया मार्गदर्शन करता है । स्वागतार्ह नयी संकल्पना सबके मनको, रसिक मनको मोहिती करती है । नवसंकल्पनाका स्वीकार करनाही योग्य होता है । औचित्यविचार चर्चा काव्यके क्षेत्रमे महत्वपूर्ण है । औचित्यविचारसे काव्यका परीक्षण करना इसे सुवर्णपरीक्षण कह सकते है । निर्दोष तथा रसिक मनको लुभानेवाला सरस काव्यही चिरंतन तथा श्रेष्ठ ठरता है । इसमे कोई संदेह नही है ।

उपर्युक्त इन सभी विचारधाराओंका अवलोकन करने के पश्चात यह विचार सामने आता है की, भारतीय साहित्यशास्त्र एक महत्त्वपूर्ण तथा परिपूर्ण साहित्यशास्त्र है । यह कविसृष्टी परिवर्तनशील है । और परिवर्तन ही काव्यकी आवश्यकता है, चूंकी ये विभिन्न साहित्याचार्योंके साहित्य लेखन पर निर्भर है । विभिन्न साहित्यकारोंने अपने विविधांगी लेखनशैली से इस काव्य को प्रस्तुत किया है । यह सभी काव्यविचार उनकी अपनी स्वतंत्र शैली पर निर्भर है । अत: इसी प्रकारके रमणीय काव्य का सादरीकरण ही पुरातन आचार्योंने किया है ।

क्षणे क्षणे यत् अदोषत्वमुपैति ।
रमणीय काव्यस्य तदेव रूपम् ॥

यही भारतीय साहित्यशास्त्रका मूल रूप है । इसमे कोई संदेह नही ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) भारतीय काव्यशास्त्रके मूल प्रश्न, डॉ. नगेंद्र
२) भारतीय काव्यशास्त्रकी भूमिका, डॉ. नगेंद्र
३) काव्यदोष, डॉ. जनार्दनस्वरुप अग्रवाल
४) भारतीय साहित्यशास्त्र, डॉ. ग. त्र्य. देशपांडे
५) काव्यप्रकाश, आचार्य मम्मट
६) काव्यप्रकाश, अर्जुनवाडकर मंगरुळकर

Vijnana Bharati